सं. श्रो.वि./ग्रम्बाल/114-85/37432.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. बराड़ा को श्रोप्रेटिव मार्किंग कम प्रोसैंसिंग सोसाईटी लि॰., बराड़ा (श्रम्बाला) के श्रमिक श्री गुलाब सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3 (44)84-3-श्रम- दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम, की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखी मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :---

नया श्री गुलाव सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्रो.वि./ग्रम्बाला/25-84/37438.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. (1) सचिव, हरियाणा राज्य कि जली बोर्ड, चण्डीगढ़, (2) कार्यकारी ग्रिभियन्ता (ग्रोप्रणन) हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, जगाधरी, (3) चीफ इन्जीनियर (ग्रोप्रणन), हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, सैक्टर-17, चण्डीगढ़ के श्रमिक श्री ग्रवतार सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुंए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3 (44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्नैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम, की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मार्श में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री भ्रवतार सिंह की सेवाभ्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० म्रो.वि /एफ.डी./184-85/37446--चंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि में. राज फाऊंडरी एण्ड मकाद कास्टिंग प्लाट नं० 368, सैक्टर-24, फरीदाबाद, केश्रमिक श्री राजा राम तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीडोगिक विवाद है;

क्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके दारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिधसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालयु, रोहतक को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित तीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री राजा राम की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो.वि./एफ.डी./154-85/37453.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. राज फाऊंडरी एण्ड मकाद कास्टिंग, प्लाट नं० 368; सैवटर-24, फरीटाबाद, के धमिक श्री बरसाती तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौशोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शावितयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसुचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय एवं पचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है —

वया श्री बरसाती की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?